aashiqon ka haj (hindi bayan)

# आ़शिक़ों का हज

दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में
होने वाला सुन्नतों भरा हिन्दी बयान

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

نَوَيْتُ سُنَّتَ الاعْتِكَاف (**तर्जमा :** मैं ने सुन्नत ए'तिकाफ़ की निय्यत की)

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** जब भी मस्जिद में दाख़िल हों, याद रख कर नफ़्ली ए'तिकाफ़ की निय्यत फ़रमा लिया करें, जब तक मस्जिद में रहेंगे, नफ़्ली ए'तिकाफ़ का सवाब ह़ासिल होता रहेगा और ज़िमनन मस्जिद में खाना, पीना, सोना भी जाइज़ हो जाएगा।

## दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जिस ने कुरआने पाक पढ़ा, रब तआ़ला की ह़म्द की और नबी (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) पर दुरूद शरीफ़ पढ़ा नीज़ अपने रब عَزَّوَجَلَّ से मग़्फ़िरत त़लब की तो उस ने भलाई, उस की जगह से तलाश कर ली। (شعب الایمان ج۲ ص۳۷۳ حدیث۲۰۸۴)

*जो दुरूदो सलाम पढ़ते हैं*
*उन पे रब का सलाम होता है*

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** हुसूले सवाब की ख़ातिर बयान सुनने से पहले अच्छी अच्छी निय्यतें कर लेते हैं।

**फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:**

"نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ" मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है।

(اَلْمعجمُ الکبیر لِلطّبرانی ج۶ ص۱۸۵ حدیث۵۹۴۲)

**दो मदनी फूल :-**

(1) बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता।

(2) जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

www.dawateislami.net

## बयान सुनने की नियतें :

निगाहें नीची किये ख़ूब कान लगा कर बयान सुनूंगा । ۞ टेक लगा कर बैठने के बजाए इल्मे दीन की ता'ज़ीम की ख़ातिर जहां तक हो सका दो ज़ानू बैठूंगा । ۞ ज़रूरतन सिमट सरक कर दूसरे के लिये जगह कुशादा करूंगा । ۞ धक्का वग़ैरा लगा तो सब्र करूंगा, घूरने, झिड़कने और उलझने से बचूंगा । ۞ صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب، اُذْكُرُوا اللّٰه، تُوبُوْا اِلَى اللّٰهِ वग़ैरा सुन कर सवाब कमाने और सदा लगाने वालों की दिलजूई के लिये बुलन्द आवाज़ से जवाब दूंगा । ۞ बयान के बा'द ख़ुद आगे बढ़ कर सलाम व मुसाफ़हा और इनफ़िरादी कोशिश करूंगा ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

## बयान करने की नियतें :

मैं भी निय्यत करता हूं ۞ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा पाने और सवाब कमाने के लिये बयान करूंगा । ۞ देख कर बयान करूंगा । ۞ पारह 14 सूरतुन्नहूल, आयत 125 : ﴿اُدْعُ اِلٰى سَبِيْلِ رَبِّكَ بِالْحِكْمَةِ وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ﴾ (**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** अपने रब की राह की त़रफ़ बुलाओ पक्की तदबीर और अच्छी नसीह़त से) और बुख़ारी शरीफ़ (की ह़दीस 3461) में वारिद इस फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : بَلِّغُوْا عَنِّيْ وَلَوْ اٰيَةً ''पहुंचा दो मेरी त़रफ़ से अगर्चे एक ही आयत हो'' में दिये हुवे अह़काम की पैरवी करूंगा । ۞ नेकी का हुक्म दूंगा और बुराई से मन्अ़ करूंगा । ۞ अश्आ़र पढ़ते नीज़ अ़रबी, अंग्रेज़ी और मुश्किल अल्फ़ाज़ बोलते वक़्त दिल के इख़्लास पर तवज्जोह रखूंगा या'नी अपनी इल्मिय्यत की धाक बिठानी मक़्सूद हुई तो बोलने से बचूंगा । ۞ मदनी क़ाफ़िले, मदनी इन्आ़मात, नीज़ अ़लाक़ाई दौरा, बराए नेकी की दा'वत वग़ैरा की रग़बत दिलाऊंगा । ۞ क़ह्क़हा लगाने और लगवाने से बचूंगा । ۞ नज़र की हिफ़ाज़त का ज़ेहन बनाने की ख़ातिर ह़त्तल इमकान निगाहें नीची रखूंगा । اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

## काश ! सर के बल चल के आता

मन्क़ूल है कि ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह इब्ने मसरूक़ رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه (जो ख़लीफ़ा हारूनुर्रशीद के वज़ीर थे) को जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तौबा की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाई तो वोह गुनाहों से तौबा कर के मक्का शरीफ़ के लिये रोते हुवे पैदल नंगे पाउं रवाना हुवे । जब ह़रम के शुयूख़ (पेश्वाओं) ने सुना कि वज़ीर मक्का में पहुंचने वाले हैं, तो उन्हें सलाम करने के लिये मक्कए मुकर्रमा (زَادَهَا اللهُ شَرَفًا وَّ تَعْظِيْمًا) से बाहर जम्अ़ हुवे उन्हों ने देखा कि वज़ीर साह़िब की शक्लो सूरत बदली हुई है, बाल परागन्दा (या'नी बिखरे हुवे) और ख़ाक आलूद, जिस्म और चेहरा निहायत मैला कुचैला है, मशाइख़ ने तअ़ज्जुब करते हुवे हारून रशीद के वज़ीर से पूछा : आप ने मसाकीन की त़रह़ शक्ल बना कर बिग़ैर जूते के जंगलों और मैदानों में पैदल सफ़र क्यूं फ़रमाया ? उन्हों ने जवाब दिया : आप बताएं एक बन्दा जब अपने मौला के दरवाज़े पर ह़ाज़िरी दे उस की क्या कैफ़िय्यत होनी चाहिये ? मैं पियादा (या'नी पैदल) चल कर ह़ाज़िर हुवा हूं, ह़क़ तो येह था कि सर के बल चल कर आता । (البحرالعمیق، ص۳۱۶)

*ह़रम की ज़मीं और क़दम रख के चलना*
*अरे सर का मौक़अ़ है ओ जाने वाले*

(ह़दाइके़ बख़्शिश, स. 158)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** देखा आप ने कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसरूक़ رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه जब सफ़रे मक्का के लिये रवाना हुवे तो इन्तिहाई ख़स्ता ह़ालत में नंगे पाउं सूए ह़रम चल पड़े, जब वज्ह पूछी गई तो कितना प्यारा जवाब अ़ता फ़रमाया कि जब एक ग़ुलाम अपने मौला की बारगाह में ह़ाज़िर हो तो ह़क़ तो येह है कि सर के बल चल कर आए, मैं तो फिर भी पियादा (पैदल) ह़ाज़िर हुवा हूं । यक़ीनन उस अ़ज़ीमुश्शान बारगाह के

मुनासिब भी येही है कि बन्दा जब वहां जाए तो शाहाना और मुतकब्बिराना अन्दाज़ न हो बल्कि इन्तिहाई आ़जिज़ी व इन्किसारी के साथ ह़ाज़िरी की सआ़दत पाए। ह़दीसे पाक में भी इस की तरग़ीब मिलती है। चुनान्चे, बारगाहे रिसालत में किसी ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ह़ाजी को कैसा होना चाहिये ? इरशाद फ़रमाया : परागन्दा सर, मैला कुचैला।

(شرح السنہ للبغوی، کتاب الحج، باب وجوب الحج... الخ، ج۴، ص:۹، حدیث:۱۸۴۰)

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** ह़रमैने त़य्यिबैन के सफ़रे सआ़दत की तमन्ना हर एक आ़शिक़ के दिल में होती है और होनी भी चाहिये। बा'ज़ ख़ुश नसीबों की मुरादें बर आती हैं और वोह बैतुल्लाह शरीफ़ की ज़ियारत और मनासिके ह़ज की अदाएगी के बा'द रौज़ए रसूल के पुरकैफ़ जल्वों से मुस्तफ़ीज़ होते हैं। और बा'ज़ आ़शिक़ाने रसूल हर वक़्त यादे मदीना में बे चैन रहते हैं, बस उन के दिल में एक येही आरज़ू होती है कि !

*इ़ज़्न मिल जाए गर मदीने का काम बन जाएगा कमीने का*
*जा के उन को दिखाऊंगा मैं तो ज़ख़्मे दिल और दाग़ सीने का*
*क़ल्बे आ़शिक़ उठा धड़क इक दम ज़िक्र जब छिड़ गया मदीने का*
*आंख से अश्क हो गए जारी जब चला क़ाफ़िला मदीने का*
*उस की क़िस्मत पे रश्क आता है जो मुसाफ़िर हुवा मदीने का*
*हम को भी वोह बुलाएंगे इक दिन इ़ज़्न मिल जाएगा मदीने का*

(वसाइले बख़्शिश, स. 181)

और जो ख़ुश नसीब ह़ज व उ़मरह की सआ़दत पा कर मदीना शरीफ़ घूम आते हैं और नज़रों से सुन्हरी जालियों को चूम लेते हैं उन की आतशे शौक़ बुझती नहीं बल्कि मज़ीद भड़क उठती है और वोह हर वक़्त फ़िराक़े मदीना (या'नी मदीने की जुदाई) में बे क़रार रहते हुवे गोया ज़बाने ह़ाल से येह कह रहे होते हैं :

www.dawateislami.net

*मदीने हमें ले गया था मुक़द्दर मदीने में कैसा सुरूर आ रहा था*
*न हम काश आते यहां लौट कर घर मदीने में कैसा सुरूर आ रहा था*
*वहां बारिशे नूर होती थी पैहम न दुन्या की झन्झट ज़माने का था ग़म*
*मिला था हमें क़ुर्बे महबूबे दावर मदीने में कैसा सुरूर आ रहा था*
*कभी बैठते उन की मस्जिद में जा कर कभी दूर से तकते मेहराबो मिम्बर*
*नमाज़ों का भी लुत्फ़ था क्या वहां पर मदीने में कैसा सुरूर आ रहा था*
*यक़ीनन मदीना है सद रश्के जन्नत मदीने में है मीठे आक़ा की तुर्बत*
*ऐ अ़त्तार ! क्यूं छोड़ कर आए वोह दर मदीने में कैसा सुरूर आ रहा था*

(वसाइले बख़्शिश, स. 166)

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** का'बए मुअ़ज़्ज़मा और गुम्बदे ख़ज़रा की ज़ियारत के लिये जाना, ह़ज हो या उ़मरह, किसी भी निय्यत से सूए ह़रम क़दम बढ़ाना, यक़ीनन बहुत बड़ी सआ़दत और बड़े नसीब की बात है। और ऐसा शख़्स जो इस इरादे से घर से निकले वोह फ़ाइदे ही फ़ाइदे में है। क्यूंकि येह एक ऐसा सफ़र है कि क़दम क़दम पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मतों और उस की बरकतों की छमा छम बरसात नसीब होती है। और जब ज़ाइर ह़रमैने त़य्यिबैन में पहुंच जाए अब तो उस के वारे ही नियारे हो जाते हैं, उस के नसीब का सितारा बामे उ़रूज (या'नी बुलन्दी) पर होता है। अगर इसी दौरान वहीं पर दम निकल जाए और जन्नतुल बक़ीअ़ में दो गज़ जगह मिल जाए तो इस से बढ़ कर और क्या इन्आ़म हो सकता है। इस के साथ साथ उस के नामए आ'माल में क़ियामत तक अपने नेक अ़मल की निय्यत के मुत़ाबिक़ सवाब भी लिखा जाता रहेगा और अगर वापस आना ही पड़ जाए तो मदीने में दोबारा जाने का जां फ़िज़ा तसव्वुर भी आ़शिक़ाने रसूल के ज़ौक़ की तस्कीं का सामान हो जाता है। अल ग़रज़ ! इस मुबारक सफ़र के बड़े फ़वाइद हैं। आइये ! इस ह़वाले से चन्द फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सुनते हैं :

www.dawateislami.net

1. येह घर इस्लाम का सुतून है, जो ह़ज या उ़मरह करने वाला अपने घर से बैतुल्लाह शरीफ़ के इरादे से निकले, अगर उस की रूह़ क़ब्ज़ हो जाए तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िम्मए करम पर है कि उसे जन्नत में दाख़िल फ़रमा दे और अगर वोह (ह़ज कर के) पलटा तो अज्रो ग़नीमत के साथ लौटेगा।

(المعجم الاوسط، الحدیث ۹۰۳۳، ج۶، ص۳۵۲۔ فردوس الاخبار للدیلمی، باب الھاء، الحدیث ۷۲۰۸، ج۲، ص۳۸۲)

2. जो शख़्स अपने घर से ह़ज या उ़मरह करने के लिये निकले और फ़ौत हो जाए, तो उसे क़ियामत तक ह़ज व उ़मरह करने वाले का अज्र दिया जाता रहेगा। (شعب الایمان للبیھقی، باب فی المناسک، فضل الحج والعمرۃ، الحدیث ۴۱۰۰، ج۳، ص۴۷۴)

3. जो इस राह में ह़ज या उ़मरह के लिये निकला और मर गया उस की पेशी नहीं होगी, न ह़िसाब होगा और उस से कहा जाएगा तू जन्नत में दाख़िल हो जा। (المعجم الأوسط"، باب المیم، الحدیث: ۵۳۸۸، ج۴، ص۱۱۱)

*त़ैबा में मर के ठन्डे चले जाओ आंखें बन्द*
*सीधी सड़क येह शहरे शफ़ाअ़त नगर की है*
*ज़िन्दा रहें तो ह़ाज़िरिये बारगाह नसीब*
*मर जाएं तो ह़याते अबद ऐ़श भर की है*

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 221, 222)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो!** मक्कए मुकर्रमा व मदीनए मुनव्वरा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّ تَعْظِیْمًا की ह़ाज़िरी की सआ़दत पाना ऐसा अनमोल मौक़अ़ है कि येह नसीब वालों को ही मिलता है, इस पर जितना शुक्र किया जाए कम है। जब किसी को येह सफ़रे मुक़द्दस नसीब हो तो अपनी ख़ुश बख़्ती पर शुक्र करते, गुनाहों को याद करते और ख़ौफ़े ख़ुदा से लरज़ते कांपते हुवे इस उम्मीद के साथ सफ़र करना चाहिये कि ह़रमैने त़य्यिबैन की मुक़द्दस फ़ज़ाओं में जाएंगे, वहां हर वक़्त होने वाली रह़मतों की बारिश में नहाएंगे, गुनाहों को बख़्शवाएंगे और अपने तारीक दिल को जिलाएंगे।

www.dawateislami.net

*मैं कर के सितम अपनी जां पर कुरआन से جَآءُوْكَ सुन कर*
*आया हूं बहुत शर्मिन्दा सा सरकार तवज्जोह फ़रमाएं*

याद रखिये ! जब हम इन अच्छी अच्छी निय्यतों से सफ़र करेंगे और हर मुक़द्दस मक़ाम पर अपने गुनाहों कि वज्ह से शर्मिन्दा होते हुवे तौबा करेंगे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से हमारे गुनाह ज़रूर मुआ़फ़ हो जाएंगे । मगर अफ़्सोस ! फ़ी ज़माना एक ता'दाद है कि जो इस मुक़द्दस सफ़र को दूसरे आ़म सफ़रों की त़रह़ समझती है । उन के अन्दाज़ से तो यूं लगता है जैसे مَعَاذَاللہ عَزَّوَجَلَّ वहां भी पिकनिक मनाने आए हैं । वोही हल्ला गल्ला, वोही शोरो गुल और न थमने वाला हंसी मज़ाक़ जारी होता है । होना तो यूं चाहिये कि जिस ख़ुश नसीब को येह मौक़अ़ मुयस्सर आए तो इसे अपनी सआ़दतों की मे'राज जान कर इस के मक़्सद को समझते हुवे इस की ह़द दरजा ता'ज़ीम करे । इस सफ़र की अ़ज़्मत व अहम्मिय्यत बयान करते हुवे आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ इरशाद फ़रमाते हैं :

*हां हां रहे मदीना है ग़ाफ़िल ज़रा तू जाग*
*ओ पाउं रखने वाले येह जा चश्मो सर की है*

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 218)

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** हमें भी चाहिये कि जब इस मुबारक सफ़र पे जाने की सआ़दत नसीब हो तो इस की ता'ज़ीम बजा लाते हुवे, इस बात का ख़ास ख़याल रखा जाए कि कोई ऐसी बात न सरज़द हो कि जिस के सबब सारा सफ़र ही बेकार हो जाए । बा'ज़ नादाना लोग उन मुक़द्दस मक़ामात पर भी मज़ाक़ मस्ख़री से बाज़ नहीं आते और दुन्या जहान की बातों में मश्ग़ूल रह कर उन का तक़द्दुस पामाल करते दिखाई देते हैं । बा'ज़ लोग वहां पर भी मोबाइल फ़ोन का बिला ज़रूरत इस्ति'माल करते हैं, बा'ज़ नादान उन मुक़द्दस मक़ामात पर अपनी तसावीर (selfie) ख़ुद ही बना कर अपना क़ीमती वक़्त भी ज़ाएअ़ करते हैं और दूसरों के लिये तशवीश का बाइ़स भी बनते हैं । न जाने ऐसे लोगों की इन ह़रकतों से कितनों के ह़ज व उ़मरह ख़राब होते होंगे और उन के ज़ौक़ो शौक़ में ख़लल पैदा होता होगा ।

www.dawateislami.net

अगर हम औलियाए कामिलीन और बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِيْن के सफ़रे ह़रमैन के वाक़िआ़त का मुत़ालआ़ करें तो हमें पता चलेगा कि येह ह़ज़रात इन्तिहाई अदबो ता'ज़ीम के साथ सफ़रे ह़ज पर रवाना होते, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से रो रो कर मुनाजात करते, अपने गुनाहों की मुआ़फ़ी मांगते, आ़जिज़ी व इन्किसारी अपनाते और ख़ौफ़े ख़ुदा और इ़श्क़े रसूल से सरशार हो कर कुछ इस त़रह़ सफ़रे मदीना के लिये रवाना होते कि उन की सोह़बत की बरकत से दूसरे लोग भी उन के रंग में रंग जाया करते थे। आइये ! एक निहायत ईमान अफ़रोज़ ह़िकायत सुनते हैं। चुनान्चे,

ह़ज़रते सय्यिदुना मुख़व्वल رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना बुहैम इ़जली رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने मुझ से फ़रमाया : मेरा ह़ज का इरादा है किसी को मेरा रफ़ीक़े सफ़र बना दीजिये। चुनान्चे, मैं ने अपने एक पड़ोसी को उन के साथ सफ़रे मदीना पर आमादा कर लिया। दूसरे दिन मेरा पड़ोसी मेरे पास आया और कहने लगा : मैं ह़ज़रते सय्यिदुना बुहैम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के साथ नहीं जा सकता। मैं ने ह़ैरत से कहा : ख़ुदा की क़सम ! मैं ने कूफ़ा भर में उन जैसा बा अख़्लाक़ आदमी नहीं देखा, आख़िर क्या वज्ह है कि तुम उन की रफ़ाक़त से ख़ुद को मह़रूम कर रहे हो ? वोह बोला : मैं ने सुना है कि वोह अक्सर रोते रहते हैं, इस लिये उन के साथ मेरा सफ़र ख़ुशगवार नहीं रहेगा। मैं ने उस को समझाया कि वोह बहुत अच्छे बुज़ुर्ग हैं, इन की सोह़बत اِنْ شَآءَاللهعَزَّوَجَلَّ तुम्हारे लिये निहायत नफ़्अ़ बख़्श होगी, वोह मान गया। जब सफ़र के लिये ऊंटों पर सामान लादा जाने लगा तो ह़ज़रते सय्यिदुना बुहैम इ़जली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى एक दीवार के क़रीब बैठ कर रोने में मश्ग़ूल हो गए, ह़त्ता कि आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की दाढ़ी मुबारक और सीना अश्कों से तर हो गया और आंसूं ज़मीन पर टप टप गिरने लगे। मेरे पड़ोसी ने घबरा कर मुझ से कहा : अभी तो सफ़र की शुरूआ़त हैं और इन का येह ह़ाल है, ख़ुदा जाने आगे क्या आ़लम होगा ! मैं ने इनफ़िरादी कोशिश करते हुवे कहा : घबराइये नहीं सफ़र का मुआ़मला है, हो सकता है बाल बच्चों की जुदाई में रो रहे हों और आगे चल कर क़रार आ जाए।

www.dawateislami.net

हज़रते सय्यिदुना बुहैम इजली رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने येह बात सुन ली और फ़रमाया : वल्लाह ! ऐसी बात नहीं इस सफ़र के सबब मुझे "सफ़रे आख़िरत" याद आ गया । येह फ़रमाते ही चीख़ें मार मार कर रोने लगे । पड़ोसी ने फिर परेशानी के आ़लम में मुझ से कहा : मैं इन के हमराह कैसे रह सकूंगा ! हां इन का सफ़र हज़रते सय्यिदुना दावूद त़ाई और सय्यिदुना सलाम अबुल अह़वस رَحِمَهُمُاللهُ تَعَالٰی के साथ होना चाहिये क्यूंकि येह दो हज़रात भी बहुत रोते हैं, उन के साथ इन की तरकीब ख़ूब रहेगी और मिल कर ख़ूब रोया करेंगे । मैं ने फिर पड़ोसी की हिम्मत बंधाई, आख़िरे कार वोह उन के साथ सफ़रे मदीना पर रवाना हो गया । हज़रते सय्यिदुना मुह़व्वल رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : जब ह़ज से उन की वापसी हुई तो मैं अपने पड़ोसी ह़ाजी के पास गया, उस ने बताया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप को जज़ाए ख़ैर दे, मैं ने उन जैसा आदमी कहीं नहीं देखा, ह़ालांकि मैं मालदार था फिर भी ग़रीब होने के बा वुजूद वोह मुझ पर ख़ूब ख़र्च करते थे, बुढ्ढे होने के बा वुजूद रोज़े रखते, मुझ बे रोज़ा जवान के लिये खाना बनाते और मेरी बेह़द ख़िदमत किया करते थे । मैं ने कहा : आप तो उन के रोने के सबब परेशान होते थे अब क्या ज़ेह्न है ? कहा : पहले पहल मैं बल्कि दीगर क़ाफ़िले वाले भी उन के रोने की कसरत से घबरा जाते थे मगर आहिस्ता आहिस्ता उन की सोह़बत की बरकत से हम पर भी रिक़्क़त त़ारी होने लगी और उन के साथ हम सब भी मिल कर रोते थे ।

हज़रते सय्यिदुना मुह़व्वल رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه कहते हैं : इस के बा'द मैं हज़रते सय्यिदुना बुहैम इजली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِی की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा और अपने पड़ोसी ह़ाजी के बारे में दरयाफ़्त किया तो फ़रमाया : बहुत अच्छा रफ़ीक़ (साथी) था, ज़िक्रुल्लाह और क़ुरआने करीम की तिलावत की कसरत करता था और उस के आंसू बहुत जल्द बह जाया करते थे । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम को जज़ाए ख़ैर अ़त़ा फ़रमाए ।

(البحر العمیق ج۱ص۳۰۰ मुलख़्ख़सन, आशिक़ाने रसूल की 130 ह़िकायात, स. 118)

*याद नबिय्ये पाक में रोए जो उ़म्र भर*
*मौला मुझे तलाश उसी चश्मे तर की है*

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** देखा आप ने ? कि हमारे अस्लाफ़ जब सफ़रे ह़ज पर रवाना होते तो हर वक़्त ज़िक्रुल्लाह और तिलावते क़ुरआन में मश्ग़ूल रहते, ख़ौफ़े ख़ुदा में आंसू बहाते, अपने रुफ़क़ा की ख़ूब ख़ैर ख़्वाही फ़रमाते । उन के हुस्ने अख़्लाक़ और आ़दतो किरदार से मुतअस्सिर हो कर उन के साथ सफ़र करने वाले भी उन्ही के रंग में रंग जाते । इस ह़िकायत से येह भी मा'लूम हुवा कि हमारे अस्लाफ़ जब किसी सफ़र पर जाते, यहां तक कि सफ़रे ह़ज जैसे मुबारक और मुक़द्दस सफ़र पर भी जाते, तब भी उन्हें सफ़रे आख़िरत याद आ जाता और फ़िक्रे आख़िरत में इस क़दर आंसू बहाते कि दाढ़ी मुबारक आंसूओं से तर हो जाती । जब कि एक त़रफ़ हम हैं कि सफ़रे आख़िरत के बारे में सोचना तो दर किनार, गोया हम ने दुन्या में हमेशा रहने और इस की रंगीनियों में बद मस्त रहने को ही मक़्सदे ह़यात समझ रखा है । ह़ालांकि अ़क़्लमन्द वोही है जो दुन्या के हर हर अ़मल पर फ़िक्रे आख़िरत करता रहे, रात को जब सोने लगे तो क़ब्र में सोने को याद करे कि वहां नर्म व मुलाइम बिस्तर नहीं होगा बल्कि सख़्त ज़मीन मेरा बिछौना होगी, जब ठन्डा और मीठा पानी अपने ह़ल्क़ से उतारे तो मह़शर की प्यास को याद करे कि उस दिन ह़ल्क़ ख़ुश्क और ज़बानें सूख कर कांटा हो जाएंगी । जिस वक़्त गर्मी की शिद्दत से जीना दुश्वार हो उस वक़्त रोज़े मह़शर की गर्मी को याद करे कि क़ियामत का पचास हज़ार (50,000) साला दिन होगा, सूरज सवा मील पर रह कर आग बरसा रहा होगा, उस की तपिश से बचने के लिये कोई साया मुयस्सर न होगा, दहकती हुई ज़मीन पर नंगे पाउं खड़ा कर दिया जाएगा, गर्मी और प्यास से बुरा ह़ाल होगा । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें अपने दुन्यवी मुआ़मलात शरीअ़त के मुत़ाबिक़ गुज़ारने के साथ साथ अपनी आख़िरत की ख़ूब ख़ूब तय्यारी करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए ।

*मुझ पे चश्मे शिफ़ा कीजिये दूर बारे गुनाह कीजिये*
*माल के जाल में फंस गया मुझ को आक़ा रिहा कीजिये*
*या नबी आप ही कुछ इलाज नफ़्सो शैत़ान का कीजिये*

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** सफ़र चाहे दुन्यवी हो या उख़रवी इस की तय्यारी के कुछ आदाब होते हैं। अगर तय्यारी में कुछ कमी रह जाए या दौराने सफ़र इन आदाब का ख़याल न रखा जाए तो सफ़र में दिक़्क़त व मशक़्क़त का सामना हो सकता है। अगर उख़रवी सफ़र के लिये नेक आ'माल की सूरत में ज़ादे सफ़र साथ होगा तो اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ ब आसानी मन्ज़िल तक पहुंच जाएंगे और कोई परेशानी भी नहीं होगी। और दुन्यवी सफ़र के भी कुछ आदाब हैं आइये ! इन में से चन्द आदाब सुनते हैं :

1. सफ़र शुरूअ़ करने से पहले अच्छी अच्छी निय्यतें कर लेनी चाहिये। जैसे घर आने जाने और रास्ते में मिलने वालों से सलाम व मुसाफ़हा की निय्यत, सलाम का जवाब देने की निय्यत, बद निगाही से हिफ़ाज़त के साथ साथ हर क़िस्म के गुनाहों से ख़ुद को बचाने की निय्यत, नमाज़ की हिफ़ाज़त की निय्यत वग़ैरा वग़ैरा। इन पर मज़ीद निय्यतें भी बढ़ाई जा सकती हैं। (सफ़रे हज व उ़मरह और ज़ियारते मदीनए मुनव्वरा زَادَهَااللہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا की मज़ीद अच्छी अच्छी निय्यतों और शरई मसाइल की मा'लूमात के लिये शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ की 351 सफ़हात पर मुश्तमिल माया नाज़ तस्नीफ़ ''रफ़ीक़ुल ह़रमैन'' का मुत़ालआ़ बेह़द मुफ़ीद रहेगा।)
2. सफ़र की मसनून दुआ़एं पढ़ लेनी चाहिये। मुमकिन हो तो दीगर आ़शिक़ाने रसूल को भी पढ़ा दें।
3. दूसरों को गवाह बनाते हुवे तमाम गुनाहों से सच्ची तौबा और एह़तियात़न तजदीदे ईमान भी करना चाहिये।
4. हुज्जतुल इस्लाम, ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْوَالِی फ़रमाते हैं : (सफ़र करने वाले को चाहिये कि) दौराने सफ़र ज़िक्र और तिलावते कुरआन करता रहे लेकीन इतनी आवाज़ में कि दूसरा न सुने, अगर कोई शख़्स उस से गुफ़्तगू करे तो ज़िक्र व तिलावत छोड़ दे और जब तक वोह बात करे उस की बात

www.dawateislami.net

ग़ौर से सुने, जब ख़ामोश हो जाए तो फिर अपनी ह़ालत पर लौट आए (या'नी ज़िक्र वग़ैरा शुरूअ़ कर दे) । (احیاء العلوم: ۲/۹۳۴)

5. मुसाफ़िर के लिये पांच[5] चीज़ों का अपने पास रखना सुन्नत है । चुनान्चे, उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا बयान करती हैं कि मेरे सरताज, साह़िबे मे'राज صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जब सफ़र पर रवाना होते तो पांच[5] चीज़ें अपने साथ ज़रूर रखते । (1) आईना (2) सुर्मादानी (3) क़ैंची (4) मिस्वाक और (5) कंघा

(المعجم الاوسط، ۲/۲۰، الحدیث: ۲۳۵۲، ملخصاً)

6. अपने रिश्तेदार, दोस्त, अह़बाब और मुतअ़ल्लिक़ीन सब के दीन, जान, माल, अवलाद, तन्दुरुस्ती और आ़फ़िय्यत ख़ुदा को सोंप कर सफ़र पर रवाना होना चाहिये ।

सफ़र और आदाबे सफ़र के बारे में मज़ीद मा'लूमात जानने के लिये मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ दो कुतुब इह़याउल उ़लूम जिल्द दुवुम सफ़ह़ा 885 ता 970 और बहारे शरीअ़त जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 1051 ता 1067 का मुत़ालआ़ कर लीजिये । اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ मुफ़ीद मा'लूमात का ज़ख़ीरा हाथ आएगा ।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

एक शख़्स ने ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ातिमे असम्म عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَکْرَم से अ़र्ज़ की : "मुझे ह़ज का सफ़र दर पेश है, कोई ऐसा हम सफ़र बताइये जिस की सोह़बते बा बरकत का फ़ैज़ लूटते हुवे मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाहे बेकस पनाह में ह़ाज़िर हो सकूं।" फ़रमाया : "ऐ भाई ! अगर तुम हम नशीन चाहते हो तो तिलावते क़ुरआने मुबीन की हम नशीनी (या'नी सोह़बत) इख़्तियार करो और अगर साथी चाहते हो तो फ़िरिश्तों को अपना साथी बना लो और अगर दोस्त दरकार हो तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने दोस्तों के दिलों का मालिक है और अगर तौशा (या'नी ज़ादे सफ़र) चाहते हो तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर यक़ीन सब से बेहतरीन तौशा है और का'बतुल्लाह को अपने सामने तसव्वुर करते हुवे ख़ुशी से इस का त़वाफ़ करो ।"

(بحر الدموع ص۱۲۵) अज़ आ़शिक़ाने रसूल की 130 ह़िकायात, स. 101)

www.dawateislami.net

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** हज़रते सय्यिदुना हातिमे असम्म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم ने कितनी प्यारी नसीहत फ़रमाई । काश ! कि हम भी इस नसीहत पर अमल करने वाले बन जाएं और सफ़रे हज की अज़मत और इस के मक़ासिद को समझने वाले बन जाएं । उमूमन देखा गया है कि बा'ज़ लोग हर साल हज़ व उमरह के मुबारक सफ़र पर रवाना होते, का'बतुल्लाह शरीफ़ की ज़ियारत और इस के तवाफ़ का शरफ़ पाते और दीगर मनासिके हज की अदाएगी के बा'द रौज़ए रसूल की हाज़िरी की सआदत हासिल करते हैं लेकिन जब लौटते हैं तो हस्बे साबिक़ गुनाहों भरी ज़िन्दगी में मश्ग़ूल हो जाते हैं और वोह बुराइयां जूं की तूं उन में बाक़ी रहती हैं । ऐसे अफ़राद को ग़ौर करना चाहिये कि आख़िर क्या वज्ह है ? उन मुक़द्दस मक़ामात की बार बार हाज़िरी के बा वुजूद भी हम अपनी इस्लाह नहीं कर सके । कहीं ऐसा तो नहीं कि येह सारे हज व उमरह सिर्फ़ नफ़्स की ख़्वाहिश और लोगों को दिखाने और खुद को "हाजी साहिब" कहलवाने के लिये किये हों ? क्यूंकि लोगों की नज़र में कसीर हज व उमरह करने और आबिदो ज़ाहिद के नाम से मुतआरफ़ होने की ख़्वाहिश इबादात में बड़ी से बड़ी मशक़्क़त भी आसान कर देती है । जैसा कि हज़रते सय्यिदुना अबू मुहम्मद मुरतइश رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "मैं ने बहुत से हज किये और उन में से अक्सर सफ़रे हज किसी क़िस्म का ज़ादे राह लिये बिग़ैर किये । फिर मुझ पर आश्कार (या'नी ज़ाहिर) हुवा कि येह सब तो मेरे नफ़्स का धोका था क्यूंकि एक मरतबा मेरी मां ने मुझे पानी का घड़ा भर कर लाने का हुक्म दिया तो मेरे नफ़्स पर उन का हुक्म गिरां (या'नी ना गवार) गुज़रा, चुनान्चे, मैं ने समझ लिया कि सफ़रे हज में मेरे नफ़्स ने मेरी मुवाफ़क़त फ़क़त अपनी लज़्ज़त के लिये की और मुझे धोके में रखा क्यूंकि अगर मेरा नफ़्स फ़ना हो चुका होता तो आज एक हक़्क़े शरई पूरा करना (या'नी मां की इताअत करना) इसे (या'नी नफ़्स को) बेहद दुश्वार क्यूं महसूस होता !" (الرسالۃ القشیریۃ، ص۱۳۵)

www.dawateislami.net

## हुब्बे जाह की लज़्ज़त इबादत की मशक़्क़त आसान कर देती है

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** इस ह़िकायत का हरगिज़ येह मत़लब नहीं कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मुह़म्मद मुरतइश رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने अपनी वालिदए मोह़तरमा का हुक्म नहीं माना बल्कि उन का हुक्म सिर्फ़ नफ़्स पर गिरां गुज़रा तो आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने अपना येह ज़ेह्न बना लिया कि इतने साल तक ह़ज जैसी मुश्किल इबादत, मैं ने सिर्फ़ नफ़्स के धोके का शिकार हो कर अदा की है। इस ह़िकायत से मज़ीद येह भी मा'लूम हुवा कि हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِيْن कैसी मदनी सोच रखते और किस क़दर आ़जिज़ी के ख़ूगर हुवा करते थे। बा'ज़ों की आ़दत होती है कि वोह आ़म लोगों से तो झुक झुक कर मिलते और उन के लिये बिछ बिछ जाते हैं मगर वालिदैन भाई बहनों और बाल बच्चों के साथ उन का रविय्या जारिह़ाना, ग़ैर अख़्लाक़ी और बसा अवक़ात सख़्त दिल आज़ार होता है ऐसा क्यूं ? इस लिये कि अ़वाम में उ़म्दा अख़्लाक़ का मुज़ाहरा मक़्बूलिय्यते आ़म्मा का बाइ़स बनता है जब कि घर में हुस्ने सुलूक करने से इ़ज़्ज़त व शोहरत मिलने की ख़ास उम्मीद नहीं होती ! इस लिये येह लोग अ़वाम में ख़ूब मीठे मीठे बने रहते हैं ! इसी त़रह़ जो इस्लामी भाई बा'ज़ मुस्तह़ब कामों के लिये बढ़ चढ़ कर क़ुरबानियां पेश करते मगर फ़राइज़ो वाजिबात की अदाएगी में कोताहियां बरतते हैं मसलन मां बाप की इत़ाअ़त, बाल बच्चों की शरीअ़त के मुत़ाबिक़ तर्बिय्यत नहीं करते और ख़ुद फ़र्ज़ उ़लूम के हुसूल में ग़फ़्लत से काम लेते हैं, उन के लिये भी इस ह़िकायत में इ़ब्रत के निहायत अहम मदनी फूल हैं। ह़क़ीक़त येह है कि जिन नेक कामों में "शोहरत मिलती और वाह वाह ! होती है" वोह दुश्वार होने के बा वुजूद ब आसानी सर अन्जाम पा जाते हैं क्यूंकि हुब्बे जाह (या'नी शोहरत व इ़ज़्ज़त की चाहत) के सबब मिलने वाली लज़्ज़त बड़ी से बड़ी मशक़्क़त आसान कर देती है। याद रखिये ! "हुब्बे जाह" में हलाकत ही हलाकत है। इ़ब्रत के लिये दो फ़रामैने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सुन लीजिये :

www.dawateislami.net

(1) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ताअ़त (या'नी इबादत) को बन्दों की त़रफ़ से की जाने वाली ता'रीफ़ की मह़ब्बत से मिलाने से बचते रहो, कहीं तुम्हारे आ'माल बरबाद न हो जाएं । (فردوس الاخبار، ج۱ ص ۲۲۳ حدیث ۱۵۶۷) (2) दो भूके भेड़िये बकरियों के रेवड़ में इतनी तबाही नहीं मचाते जितनी तबाही हुब्बे मालो जाह (या'नी मालो दौलत और इ़ज़्ज़त व शोहरत की मह़ब्बत) मुसलमान के दीन में मचाती है । (ترمذی ج۴ص۱۶۶حدیث ۲۳۸۳) (आ़शिक़ाने रसूल की 130 ह़िकायात, स. 103)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

## अपने मुंह मियां मिट्ठू बनना !

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** हमें भी चाहिये कि लोगों को दिखाने, अपनी वाह वाह करवाने और मुआ़शरे में इ़ज़्ज़त व वक़ार पाने के लिये नेक आ'माल करने से गुरैज़ करें और सिर्फ़ रिज़ाए इलाही की ख़ातिर सवाब पाने और अपनी आख़िरत बेहतर बनाने के लिये नेकियां करें । हमारे अस्लाफ़े किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام जब ह़ज व उ़मरह के लिये ह़ाज़िर होते तो वापसी पर भी इख़्लास व इस्तिक़ामत के साथ ख़ूब ख़ूब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इबादत करते ।

## रुख़्सत की इजाज़त के मुन्तज़िर जवान को बिशारत

ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुन्नून मिस्री عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِی ने का'बए मुशर्रफ़ा के पास एक जवान को देखा जो मुसलसल नमाज़ पढ़े जा रहा था और रुकने का नाम ही न लेता था । मौक़अ़ मिलने पर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने उस से फ़रमाया : क्या बात है कि वापस जाने के बजाए मुसलसल नमाज़ें पढ़े जा रहे हो ! कहने लगा : अपनी मरज़ी से कैसे जाऊं ! रुख़्सत की इजाज़त का इन्तिज़ार है ! ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुन्नून मिस्री عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : अभी हम बातें ही कर रहे थे कि उस जवान के ऊपर एक रुक़्आ़ गिरा, उस में लिखा था : "येह ख़त़ ख़ुदाए अ़ज़ीज़ो ग़फ़्फ़ार की जानिब से उस के शुक्र गुज़ार व मुख़्लिस बन्दे के लिये है, वापस जा तेरे अगले पिछले गुनाह मुआ़फ़ हैं ।"

(روض الریاحین ص۱۰۸ ملخصا) (आ़शिक़ाने रसूल की 130 ह़िकायात, स. 95,

www.dawateislami.net

आइये ! अब आ़शिक़ाने रसूल ह़ाजियों की जज़्बे व मस्ती भरी दो अ़जीबो ग़रीब ह़िकायतें सुनते हैं :

चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल बिन इ़याज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : मैदाने अ़रफ़ात में हुज्जाज मश्ग़ूले दुआ़ थे, मेरी नज़र एक नौजवान पर पड़ी जो सर झुकाए शर्मसार खड़ा था, मैं ने कहा : ऐ नौजवान ! तू भी दुआ़ कर । वोह बोला : मुझे तो इस बात का डर लग रहा है कि जो वक़्त मुझे मिला था शायद वोह जाता रहा, अब किस मुंह से दुआ़ करूं ! मैं ने कहा : तू भी दुआ़ कर ताकि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुझे भी इन दुआ़ मांगने वालों की बरकत से कामयाब फ़रमाए । ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : उस ने दुआ़ के लिये हाथ उठाने की कोशिश की, कि एक दम उस पर रिक़्क़त त़ारी हो गई और एक चीख़ उस के मुंह से निकली, तड़प कर गिरा और उस की रूह़ क़फ़से उ़नसुरी से परवाज़ कर गई । (کَشْفُ الْمَحْجُوب ص۳۶۳)

ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुन्नून मिस्री عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : मैं ने मिना शरीफ़ में एक नौजवान को आराम से बैठा देखा जब कि लोग क़ुरबानियों में मश्ग़ूल थे । इतने में वोह पुकारा : ऐ मेरे प्यारे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! तेरे सारे बन्दे क़ुरबानियों में मश्ग़ूल हैं, मैं भी तेरी बारगाह में अपनी जान क़ुरबान करना चाहता हूं, मेरे मालिक عَزَّوَجَلَّ ! मुझे क़बूल फ़रमा । येह कह कर अपनी उंगली गले पर फैरी और तड़प कर गिर पड़ा, मैं ने क़रीब जा कर देखा तो वोह जान दे चुका था । (کَشْفُ الْمَحْجُوب ص۳۶۴) 7 اضافی

***येह इक जान क्या है अगर हों करोड़ों***
***तेरे नाम पर सब को वारा करूं मैं***

(सामाने बख़्शिश, स. 135)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** देखा आप ने ? हज हो तो ऐसा ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन दोनों बा बरकत हाजियों के तुफ़ैल हमें भी रिक़्क़ते क़ल्बी नसीब फ़रमाए । याद रखिये ! हर इबादत की क़बूलिय्यत के लिये इख़्लास शर्त है । आह ! अब इल्मे दीन और अच्छी सोहबत से दूरी की बिना पर अक्सर इबादात रियाकारी की नज़्र हो जाती हैं । जिस तरह उमूमन हर काम में नुमूदो नुमाइश का अमल दख़्ल ज़रूरी समझा जाने लगा है, इसी तरह हज जैसी अज़ीम सआदत भी दिखावे की भेंट चढ़ती जा रही है, मसलन बे शुमार अफ़राद हज अदा करने के बा'द अपने आप को अपने मुंह से बिला किसी मस्लेहत व ज़रूरत के "हाजी" कहते और अपने क़लम से लिखते हैं । आप शायद चोंक पड़े होंगे कि इस में आख़िर क्या हरज है ? हां ! वाक़ेई इस सूरत में कोई हरज भी नहीं कि लोग आप को अपनी मरज़ी से हाजी साहिब कह कर पुकारें मगर ज़रा सोचिये ! अपनी ज़बान से अपने आप को हाजी कहना अपनी इबादत का खुद ए'लान करना नहीं तो और क्या है ? इस को इस चुटकुले से समझने की कोशिश कीजिये : ट्रेन छुक छुक करती अपनी मन्ज़िल की तरफ़ रवां दवां थी, दो शख़्स क़रीब क़रीब बैठे थे, एक ने सिलसिलए गुफ़्तगू का आग़ाज़ करते हुवे पूछा : जनाब का इस्मे शरीफ़ (या'नी आप का नाम क्या है) ? जवाब मिला : "हाजी शफ़ीक़" अब दूसरे ने सुवाल किया : और आप का मुबारक नाम ? पहले ने जवाब दिया : "नमाज़ी रफ़ीक़" हाजी साहिब को बड़ी हैरत हुई, पूछ डाला : अजी नमाज़ी रफ़ीक़ ! येह तो बड़ा अजीब सा नाम लगता है । नमाज़ी साहिब ने पूछा : बताइये आप ने कितनी बार हज का शरफ़ हासिल किया है ? हाजी साहिब ने कहा : اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ पिछले साल ही तो हज पर गया था । नमाज़ी साहिब कहने लगे : आप ने ज़िन्दगी में सिर्फ़ एक बार हज्जे बैतुल्लाह की सआदत हासिल की तो, ब बांगे दुहुल (या'नी खुले आम) अपने नाम के साथ "हाजी" कहने कहलवाने लगे, जब कि बन्दा तो बरसा बरस (या'नी एक मुद्दत) से रोज़ाना पांच[5] वक़्त नमाज़ अदा करता है, तो फिर अपने नाम के साथ अगर लफ़्ज़ "नमाज़ी" कह दे तो इस में आख़िर तअज्जुब की कौन सी बात है !

www.dawateislami.net

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** आज कल अ़जीब तमाशा है ! नुमूदो नुमाइश की इन्तिहा हो गई, ह़ाजी साह़िब ह़ज को जाते और जब लौट कर आते हैं तो बिग़ैर किसी अच्छी निय्यत के पूरी इमारत बरक़ी क़ुमक़ुमों से सजाते और घर पर "ह़ज मुबारक" का बोर्ड लगाते हैं, बल्कि तौबा ! तौबा कई ह़ाजी तो एह़राम के साथ ख़ूब तसावीर बनाते हैं । आख़िर येह क्या है ? क्या भागे हुवे मुजरिम का अपने रह़मत वाले आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में इस त़रह़ धूम धाम से जाना मुनासिब है ? नहीं हरगिज़ नहीं बल्कि रोते हुवे और आहें भरते हुवे, लरज़ते, कांपते हुवे जाना चाहिये । (रफ़ीक़ुल ह़रमैन, स. 49)

*आंसूओं की लड़ी बन रही हो और आहों से फटता हो सीना*
*विर्दे लब हो "मदीना मदीना" जब चले सूए त़ैबा सफ़ीना*
*जब मदीने में हो अपनी आमद जब मैं देखूं तेरा सब्ज़ गुम्बद*
*हिचकियां बांध कर रोऊं बेह़द काश ! आ जाए ऐसा क़रीना*

(वसाइले बख़्शिश, स. 188)

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** वोह लोग जो बिग़ैर अच्छी निय्यत महज़ लज़्ज़ते नफ़्स व हुब्बे जाह के सबब अपने मकान पर ह़ज मुबारक का बोर्ड लगाते और अपने ह़ज का ख़ूब चर्चा करते हैं, उन के लिये एक कमाल दरजे की आ़जिज़ी पर मुश्तमिल ह़िकायत पेशे ख़िदमत है, चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي ह़ज के लिये बसरा से पैदल निकले । किसी ने अ़र्ज़ की : आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه सुवार क्यूं नहीं होते ? फ़रमाया : क्या भागे हुवे ग़ुलाम को अपने मौला عَزَّوَجَلَّ के दरबार में सुल्ह़ के लिये सुवारी पर जाना चाहिये ? मैं उस मुक़द्दस सर ज़मीन में जाते हुवे बहुत ज़ियादा शर्म मह़सूस करता हूं ।

(تَنْبِيهُ الْمُغْتَرِّيْن ص ٢٦٧, रफ़ीक़ुल ह़रमैन, स. 54)

*ऐ ज़ाइ़रे मदीना तू ख़ुशी से हंस रहा है*
*दिले ग़मज़दा जो लाता तो कुछ और बात होती*

(वसाइले बख़्शिश, स. 385)

www.dawateislami.net

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** ग़ालिबन नमाज़ रोज़ा वग़ैरा के मुक़ाबले में ह़ज में बहुत ज़ियादा बल्कि क़दम क़दम पर ''रियाकारी'' के ख़त़रात पेश आते हैं, ह़ज एक ऐसी इ़बादत है जो एक तो अ़लल ए'लान की जाती है और दूसरे हर एक को नसीब नहीं होती, इस लिये लोग ह़ाजी से आ़जिज़ी से मिलते, ख़ूब एह़तिराम बजा लाते, हाथ चूमते, गजरे पहनाते और दुआ़ओं की दरख़्वास्तें करते हैं । ऐसे मौक़अ़ पर ह़ाजी सख़्त इम्तिह़ान में पड़ जाता है क्यूंकि लोगों के अ़क़ीदत मन्दाना सुलूक में कुछ ऐसी ''लज़्ज़त'' होती है कि इस की वज्ह से इ़बादत की बड़ी से बड़ी मशक़्क़त भी फूल मा'लूम होती और बसा अवक़ात बन्दा हुब्बे जाह और रियाकारी की तबाहकारी की गहराई में गिर चुका होता है मगर उसे कानों कान इस की ख़बर तक नहीं होती ! (रफ़ीकुल ह़रमैन, स. 56) इसी त़रह़ बा'ज़ मालदार बार बार ह़ज व उ़मरह को जाते, इस की गिनती ख़ूब याद रखते, बारहा बिग़ैर ज़रूरत बे पूछे लोगों को अपने ह़ज व उ़मरह की ता'दाद बताते और सफ़रे मदीना के ''कारनामे'' सुनाते हैं, उन को एह़सास तक नहीं होता कि कहीं रियाकारी की तबाहकारी में न जा पड़ें । (आ़शिक़ाने रसूल की 130 ह़िकायात, स. 108) मश्हूर मुह़द्दिस ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِى कहीं मदऊ़ थे, मेज़बान ने अपने ख़ादिम से कहा : उन बरतनों में खाना खिलाओ जो मैं दूसरी बार के ह़ज में लाया हूं, सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِى ने सुन कर फ़रमाया : मिस्कीन ! तू ने एक जुम्ले में दो ह़ज जाएअ़ कर दिये । ) (احسن الوعاء لآداب الدعاء، ص ۱۵۷)

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** अगर हम किसी के घर पर ''ह़ज मुबारक'' का बोर्ड लगा देखें या कोई अपने नाम के साथ ह़ाजी लिखता हो तो हमें हरगिज़ येह बद गुमानी नहीं करनी चाहिये कि येह शख़्स रियाकारी कर रहा है । याद रखिये ! अपने ह़ज व उ़मरह की ता'दाद बयान करना हर सूरत में गुनाह नहीं, ह़दीसे पाक में है : اِنَّمَا الْاَعْمَالُ بِالنِّيَّات या'नी आ'माल का दारो मदार निय्यतों पर है । (بخاری ج ۱ ص ۲ حدیث ۱) अगर कोई तह़दीसे ने'मत (या'नी अपने ऊपर ने'मते इलाही की ख़बर देने) के लिये अपने ह़ज की ता'दाद बयान करे तो ह़रज नहीं, मगर इ़ल्मे दीन और सोह़बते अख़्यार (नेक लोगों की सोह़बत)

www.dawateislami.net

की कमी के बाइस फ़ी ज़माना इस्लाहे़ निय्यत बेहद दुश्वार और रियाकारी का ख़तरा शदीद है । और ख़ुदा की क़सम ! रियाकारी का अ़ज़ाब किसी से भी बरदाश्त नहीं हो सकेगा ।

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 616 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब "नेकी की दा'वत (हि़स्सा अव्वल)" सफ़हा 79 पर फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : "बेशक जहन्नम में एक वादी है जिस से जहन्नम रोज़ाना चार सो[400] मरतबा पनाह मांगता है । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने येह वादी उम्मते मुह़म्मदिय्या عَلٰى صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के उन रियाकारों के लिये तय्यार की है जो क़ुरआने करीम के ह़ाफ़िज़, ग़ैरुल्लाह के लिये सदक़ा करने वाले, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के घर के ह़ाजी और राहे ख़ुदा में निकलने वाले होंगे ।" (اَلْمُعْجَمُ الْكَبِيْر ج۱۲ص۱۳۶حدیث۱۲۸۰۳, रफ़ीक़ुल ह़रमैन, स. 56)

*मेरा हर अ़मल बस तेरे वासित़े हो*
*कर इ़ख़लास ऐसा अ़त़ा या इलाही !*

(वसाइले बख़्शिश, स. 105)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** ह़रमैने त़य्यिबैन की ह़ाज़िरी मुक़द्दर की बात है । कितने ही मालदार ऐसे हैं जो ह़सरते ख़ाक बोसिए त़यबा में आहें भरते हैं, जाने की ख़्वाहिश भी रखते हैं मगर जा नहीं पाते और कितने ही ग़रीब व नादार अफ़राद ऐसे होते हैं जिन के पास जाने के बज़ाहिर अस्बाब नहीं होते मगर देखते ही देखते वोह ख़ुश नसीब लोग मक्कए मुकर्रमा, मदीनए मुनव्वरा زَادَهَا اللهُ شَرَفًا وَّ تَعْظِيْمًا की ज़ियारत से मुशर्रफ़ हो जाते हैं ।

अ़ल्लामा इब्ने जौज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى ह़ज व ज़ियारते मदीना में तड़पने वाले एक शख़्स का वाक़िआ़ नक़्ल फ़रमाते हैं : "मैं मुसलसल तीन[3] साल से ह़ज की दुआ़ कर रहा था लेकिन मेरी येह ह़सरत दिल ही में रही ।"

www.dawateislami.net

*कर रहे हैं जाने वाले, हज की अब तय्यारियां*
*रह न जाऊं मैं कहीं, कर दो करम फिर या नबी*

*मुझ पे क्या गुज़रेगी आक़ा ! इस बरस गर रह गया*
*मेरा हाले दिल तो है, सब तुम पे ज़ाहिर या नबी*

(वसाइले बख़्शिश, स. 376, 377)

चौथे साल हज का मौसिम क़रीब था । मेरे दिल में ज़ियारते हरमैने शरीफ़ैन की ख़्वाहिश मचल रही थी । अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का करम हुवा मेरी दुआ की क़बूलिय्यत कुछ इस अन्दाज़ में हुई कि एक रात जब मैं सोया तो मेरी दिल की आंखें खुल गईं, सोई हुई क़िस्मत अंगड़ाई ले कर जाग उठी, मुझे रहमते आलम, नूरे मुजस्सम, रसूले मोहूतशम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत नसीब हुई । आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''तुम इस साल हज के लिये चले जाना ।'' मेरी आंख खुली तो दिल खुशी से झूम रहा था । बारगाहे नबुव्वत से हज की इजाज़त मिल चुकी थी । सरकारे मदीना, राहते क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मीठी मीठी आवाज़ अब तक कानों में रस घोल रही थी, मैं बहुत शादां व फ़रहां था । अचानक मुझे याद आया कि मेरे पास ज़ादे राह तो है नहीं, मैं तो बिल्कुल बे सरो सामान हूं । बस इस ख़याल के आते ही मैं ग़मगीन हो गया । दूसरी रात फिर ख़्वाब में हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का दीदार हुवा लेकिन मैं अपनी बे सरो सामानी का ज़िक्र न कर सका । इसी तरह तीसरी रात भी बारगाहे नबुव्वत से हुक्म हुवा कि ''तुम इस साल हज को चले जाना ।'' मैं ने सोचा अगर दोबारा ख़्वाब में मेरे आक़ा व मौला صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तशरीफ़ लाए तो मैं अपनी बे सरो सामानी के मुतअ़ल्लिक़ अ़र्ज़ करूंगा ।

*पास मालो ज़र नहीं, उड़ने को भी पर नहीं*
*कर दो कोई इन्तिज़ाम, तुम पर करोड़ों सलाम*

www.dawateislami.net

चौथी रात ख़्वाब में फिर मदीने के ताजवर, सुल्त़ाने बहूरों बर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मेरे घर में जल्वागरी फ़रमाई, आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुझ से येही इरशाद फ़रमा रहे थे : "तुम इस साल ह़ज को चले जाना ।" मैं ने दस्त बस्ता अ़र्ज़ की : "मेरे आक़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मेरे पास तो ज़ादे राह भी नहीं ।" इरशाद फ़रमाया : "क्यूं नहीं ! तुम अपने मकान की फ़ुलां जगह खोदो वहां तुम्हारे दादा की ज़िरह मौजूद होगी ।" इतना फ़रमा कर नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बहूरो बर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तशरीफ़ ले गए । सुब्ह़ जब मेरी आंख खुली तो मैं बहुत ख़ुश था । नमाज़े फ़ज्र अदा करने के बा'द आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बताई हुई जगह खोदी तो वहां वाक़ेई एक क़ीमती ज़िरह मौजूद थी । वोह ऐसी नई थी गोया उसे किसी ने इस्ति'माल ही न किया हो । मैं ने उसे चार हज़ार[4000] दीनार में बेचा और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा किया । اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की नज़रे इनायत से अस्बाबे ह़ज का ख़ुद ही इन्तिज़ाम हो गया । मैं ज़ादे राह ख़रीद कर हुज्जाज के क़ाफ़िले में शामिल हो गया । अब हमारा क़ाफ़िला सूए ह़रम रवां दवां था । ह़रम शरीफ़ पहुंच कर मनासिके ह़ज अदा किये । अब वापसी का इरादा था मैं वहां के मनाज़िर पर अलवदाई नज़र डाल रहा था । जुदाई का वक़्त क़रीब आता जा रहा था । मैं नवाफ़िल अदा करने "अबत़ह़" की जानिब गया । वहां कुछ देर आराम के लिये बैठा तो ऊंघ आ गई, सर की आंखें बन्द हो रही थी और दिल की आंखें खुल रही थीं । नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बहूरो बर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपना नूरानी चेहरा चमकाते मुस्कुराते हुवे तशरीफ़ लाए और इरशाद फ़रमाया : "ऐ ख़ुश बख़्त ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तेरी सई को क़बूल फ़रमा लिया है ।" (उ़यूनुल ह़िकायात, स. 326)"

***जिसे चाहा दर पे बुला लिया, जिसे चाहा अपना बना लिया***
***येह बड़े करम के हैं फ़ैसले, येह बड़े नसीब की बात है***

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** हरमैने तय्यिबैन की ज़ियारत के लिये जाना नसीब की बात है । इस लिये जब भी येह पुर मसर्रत मौक़अ़ मुयस्सर आए तो निहायत अ़क़ीदतो अदब के साथ सरापा इज्ज़ो नियाज़ के पैकर बन कर येह मुक़द्दस सफ़र कीजिये ! राह में पेश आने वाली मुश्किलात पर सब्र, सब्र, और सब्र और फिर भी सब्र ही से काम लीजिये ! ख़ूब ख़ूब गुनाहों से बचिये ! मुकम्मल आ़जिज़ी व इन्किसारी के पैकर बन कर इस सफ़र की बरकतें समेटिये ! ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बाक़िर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه जब ह़ज के लिये मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللهُ شَرَفًا وَّ تَعْظِيْمًا तशरीफ़ ले गए और मस्जिदुल ह़राम में दाख़िल हुवे तो बैतुल्लाह शरीफ़ को देखा तो रोने लगे हत्ता की रोने में आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की आवाज़ बुलन्द हो गई, किसी ने अ़र्ज़ की : या सय्यिदी ! सब लोगों की नज़रें आप की त़रफ़ लग गई हैं, इस क़दर ज़ोर से गिर्या व ज़ारी न फ़रमाइये । फ़रमाया : "क्यूं न रोऊं ! शायद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरे रोने के सबब मुझ पर रह़मत की नज़र फ़रमा दे और मैं बरोज़े क़ियामत उस की बारगाह में कामयाब हो जाऊं ।" फिर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने त़वाफ़ किया और "मक़ामे इब्राहीम" पर नमाज़ पढ़ी जब सजदे से सर उठाया तो सजदे की जगह आंसूओं से तर थी । (روض الریاحین ص ۱۱۳)

*वोही सर बर सरे महशर बुलन्दी पाएगा जो सर*
*यहां दुन्या में इन के आस्ताने पर झुका होगा*

(वसाइले बख़्शिश, स. 182)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

## बयान का ख़ुलासा

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** आज हम ने सुना कि आ़शिक़ाने रसूल का सफ़रे ह़ज करने का अन्दाज़ कैसा होता था । वोह जब सफ़रे ह़ज के लिये रवाना होते तो निहायत रिक़्क़ते क़ल्बी के साथ, अपने गुनाहों को याद करते, लर्ज़ां व तर्सां उस बारगाहे वाला तबार में ह़ाज़िर होते । लिबास फटा हुवा, सर मिट्टी से अटा हुवा, फ़क़ीरों मिस्कीनों की सी सूरत बना कर वोह उस दरबारे

www.dawateislami.net

गोहर बार में हाज़िर होते और हदीसे पाक में भी येही तरग़ीब दिलाई गई है कि हाजी को परागन्दा सर, मैला कुचैल हो कर हाज़िर होना चाहिये, जब कि अफ़्सोस ! कि हम ने अपने अस्लाफ़ के त़रीक़े को छोड़ कर निहायत उ़म्दा व नफ़ीस सूट पहन कर उस मुक़द्दस सफ़र को भी दुन्या के बाक़ी सफ़रों की त़रह़ पिकनिक का ज़रीआ़ समझ रखा है, हमारे बुज़ुर्गाने दीन तो इस अदा से आ़ज़िमे सफ़र होते कि जो उन के साथ चलता वोह भी उन के रंग में ढलता चला जाता, रोना धोना और यादे ख़ुदा में मदहोश रहना उस का भी मा'मूल बन जाता । काश ! कि हमें भी ऐसी ही रिक़्क़ते क़ल्बी के साथ उस पाक बारगाह में हाज़िरी की सआ़दत नसीब हो जाए ।

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

## मजलिसे राबित़ा बिल उ़लमा वल मशाइख़

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी, रज़वी, ज़ियाई دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ की सुन्नी उ़लमा व मशाइख़ से मह़ब्बत के नतीजे में तब्लीगे़ कुरआनो सुन्नत की आ़लगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी ने एक शो'बा ब नाम "मजलिसे राबित़ा बिल उ़लमा वल मशाइख़" भी क़ाइम किया है । ताकि इस के ज़रीए़ सुन्नी उ़लमाए किराम व मशाइख़े इ़ज़्ज़ाम (अइम्मए मसाजिद, ख़ुत़बा, मुदर्रिसीन) को तब्लीगे़ कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी की दीनी ख़िदमात से आगाह किया जाए, उन से तअ़ल्लुक़ात उस्तुवार कर के उन्हें दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्ता किया जाए और उन से दा'वते इस्लामी के मदनी कामों में मुआ़वनत ह़ासिल की जाए । और उन की दुआ़एं ली जाएं और सुन्नी मदारिस व जामिआ़त में दा'वते इस्लामी के मदनी कामों की तरकीब बनाई जाए ।

*अल्लाह करम ऐसा करे तुझ पे जहां में*
*ऐ दा'वते इस्लामी तेरी धुम मची हो*

www.dawateislami.net

## 12 मदनी कामों में हिस्सा लीजिये !

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** नेकियां करने गुनाहों से बचने और नेकी की दा'वत को आम करने के लिये ज़ैली हल्क़े के 12 मदनी कामों में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लीजिये । ज़ैली हल्क़े के 12 मदनी कामों में से रोज़ाना का एक मदनी काम **"चौक दर्स"** भी है । आज कल जिस तरह हमारे मुआशरे में हर तरफ़ गुनाहों का बाज़ार गर्म है, इसी तरह बाज़ार भी इन गुनाहों से महफ़ूज़ नहीं हैं । बल्कि वहां भी गुनाहों का एक न थमने वाला सिलसिला है । बद कलामी, झूट, धोका, फ्रॉड, झूटी क़समें, बद निगाही से ले कर नमाज़ें छोड़ने और एक दूसरे की ग़ीबतें करने के साथ साथ हर क़िस्म के गुनाहों से बाज़ार भरे हुवे हैं । तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तहरीक दा'वते इस्लामी जहां ज़िन्दगी के हर शो'बे में नेकी की दा'वत आम करने में मसरूफ़े अमल है वहीं बाज़ार भी इस नेकी की दा'वत से महरूम नहीं । इस मदनी काम की बरकत से बाज़ार में भी नेकी की दा'वत देने का मौक़अ मिलता है या'नी बे नमाज़ियों तक नमाज़ की दा'वत, सुन्नतों से महरूम अफ़राद तक सुन्नतों पर अमल करने की दा'वत पहुंचाने की सआदत हासिल होती है । लिहाज़ा हमें भी ज़ियादा से ज़ियादा चौक दर्स देने की कोशिश करनी चाहिये ताकि हमारे बाज़ारों का माहोल भी सुन्नतों भरा हो सके । आइये ! तरग़ीब के लिये चौक दर्स की एक मदनी बाहर सुनते हैं ।

सूबा उतरांचल (हिन्द) के एक 20 साला नौजवान इस्लामी भाई के बयान का ख़ुलासा है : मैं बुरी सोहबत के बाइस कमो बेश 14 साल की उम्र ही से जराइम की दलदल में फंस चुका था । लोगों से बे वज्ह लड़ना, मार पीट करना, मेरी आदत में शामिल हो गया यहां तक कि मैं राना बद मुआश के नाम से पहचाना जाने लगा । मैं उम्र में छोटा ज़रूर था मगर मैं किसी से डरे बिग़ैर सामने वाले पर पे दर पे वार करना शुरूअ कर देता था । हर तरफ़ मेरी धाक बैठ गई, लोग मेरे नाम से डरने लगे । वालिदैन मुझ से बेज़ार हो चुके थे मगर बे बस थे । मेरे काले करतूत दिन ब दिन बढ़ते जा रहे थे । एक दिन गली के नुक्कड़ (या'नी कोने) पर एक सब्ज़ इमामे वाले इस्लामी भाई को चौक दर्स

www.dawateislami.net

देता देख कर मैं क़रीब जा खड़ा हुवा, जो कुछ सुना वोह मुझे बहुत अच्छा लगा। मैं ने किताब पर नज़र डाली तो उस पर फ़ैज़ाने सुन्नत लिखा था। दर्स देने वाले इस्लामी भाई ने मुझ से बड़ी महब्बत के साथ मुलाक़ात की और इनफ़िरादी कोशिश करते हुवे मुझे मदनी क़ाफ़िले में सफ़र की दा'वत पेश की, फ़ैज़ाने सुन्नत के दर्स ने मेरे अन्दर हलचल मचा रखी थी, मैं ने हामी भर ली और आ़शिक़ाने रसूल के हमराह तीन[3] दिन के लिये दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तर्बिय्यत के मदनी क़ाफ़िले में सफ़र करते हुवे ''जनकपुर'' पहुंचा और मज़ीद तीन[3] दिन के लिये राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में ''जगन्नाथपुर'' जाने वाले मदनी क़ाफ़िले के साथ सुन्नतों भरे सफ़र की सआ़दत हासिल की। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **चौक दर्स** और मदनी क़ाफ़िले में सफ़र की सआ़दत हासिल करने की बरकत से मेरे दिल में मदनी इन्क़िलाब बर्पा हो गया, मैं ने साबिक़ा गुनाहों से तौबा कर ली और दाढ़ी शरीफ़ सजाने की भी निय्यत कर ली। दुआ़ फ़रमाइये कि रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ मुझे इस्तिक़ामत इनायत फ़रमाए। मेरे घर वाले मुझ में आने वाले इस मदनी इन्क़िलाब से बे इन्तिहा ख़ुश हैं। वालिदए मोह़तरमा दा'वते इस्लामी के लिये ख़ूब दुआ़एं करती हैं। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मुझ समेत मेरे घर वालों ने सिलसिलए आ़लिय्या क़ादिरिय्या रज़विय्या में दाख़िल हो कर सरकारे बग़्दाद हुज़ूरे ग़ौसे पाक رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की ग़ुलामी का पट्टा अपने गले में डाल लिया है। (ग़ीबत की तबाह कारियां, स. 321)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो!** बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुवे सुन्नत की फ़ज़ीलत और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआ़दत हासिल करता हूं। ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत, मुस्त़फ़ा जाने रह़मत, शम्ए़ बज़्मे हिदायत, नौशए बज़्मे जन्नत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है: जिस ने मेरी सुन्नत से महब्बत की उस ने मुझ से महब्बत की और जिस ने मुझ से महब्बत की वोह जन्नत में मेरे साथ होगा।

(مِشْکَاۃُ الْمَصَابِیح، ج۱ ص۵۵ حدیث ۱۷۵ دارالکتب العلمیۃ بیروت)

***सीना तेरी सुन्नत का मदीना बने आक़ा***
***जन्नत में पड़ोसी मुझे तुम अपना बनाना***

www.dawateislami.net

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आइये ! शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के रिसाले ''101 मदनी फूल'' से ''चल मदीना'' के सात हुरूफ़ की निस्बत से जूते पहनने के 7 मदनी फूल सुनते है :**

**फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** ﴿1﴾ जूते ब कसरत इस्ति'माल करो कि आदमी जब तक जूते पहने होता है गोया वोह सुवार होता है । (या'नी कम थकता है) (مُسلم ص ۱۱۶۱ حدیث ۲۰۹۶) ﴿2﴾ जूते पहनने से पहले झाड़ लीजिये ताकि कीड़ा या कंकर वग़ैरा हो तो निकल जाए । ﴿3﴾ पहले सीधा जूता पहनिये फिर उलटा और उतारते वक़्त पहले उलटा जूता उतारिये फिर सीधा ।

**फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जब तुम में से कोई जूते पहने तो दाईं (या'नी सीधी) जानिब से इब्तिदा करनी चाहिये और जब उतारे तो बाईं (या'नी उलटी) जानिब से इब्तिदा करनी चाहिये ताकि दायां (या'नी सीधा) पाऊं पहनने में अव्वल और उतारने में आख़िरी रहे । (بُخاری ج ۴ ص ۶۵ حدیث ۵۸۵۵) ﴿4﴾ मर्द मर्दाना और औ़रत ज़नाना जूता इस्ति'माल करे । ﴿5﴾ किसी ने ह़ज़रते सय्यिदतुना आइशा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا से कहा कि एक औ़रत (मर्दों की त़रह़) जूते पहनती है । उन्हों ने फ़रमाया **:** रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मर्दानी औ़रतों पर ला'नत फरमाई है (اَبُوداود، ج ۴ ص ۸۴ حدیث ۴۰۹۹) ﴿6﴾ जब बैठें तो जूते उतार लीजिये कि इस से क़दम आराम पाते हैं । ﴿7﴾ (तंगदस्ती का एक सबब येह भी है कि) औंधे जूते को देखना और उस को सीधा न करना । ''दौलते बे ज़वाल'' में लिखा है कि अगर रात भर जूता औंधा पड़ा रहा तो शैत़ान उस पर आन कर बैठता है वोह उस का तख़्त है । (सुन्नी बहिश्ती ज़ेवर, ह़िस्सा 5 स. 601)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

त़रह़ त़रह़ की हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिये मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ दो कुतुब बहारे शरीअ़त ह़िस्सा 16 (312 सफ़ह़ात) नीज़ 120 सफ़ह़ात की किताब ''सुन्नतें और आदाब'' हदिय्यतन ह़ासिल कीजिये और पढ़िये । सुन्नतों की तर्बिय्यत का एक बेहतरीन ज़रीआ़ दा'वते इस्लामी के मदनी क़ाफ़िलों में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है ।

***सीखने सुन्नतें क़ाफ़िले में चलो लूटने रह़मतें क़ाफ़िले में चलो***

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

# सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में पढ़े जाने वाले 6 दुरूदे पाक और 2 दुआ़

**﴾1﴿ शबे जुमुआ़ का दुरूद :**

اَللّٰھُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدِنِ النَّبِیِّ الْاُمِّیِّ الْحَبِیْبِ الْعَالِی الْقَدْرِ الْعَظِیْمِ الْجَاہِ وَعَلٰی اٰلِہٖ وَصَحْبِہٖ وَسَلِّمْ

**बुज़ुर्गों** ने फ़रमाया कि जो शख़्स हर शबे जुमुआ़ (जुमुआ़ और जुमा'रात की दरमियानी रात) इस दुरूद शरीफ़ को पाबन्दी से कम अज़ कम एक मरतबा पढ़ेगा तो मौत के वक़्त सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ियारत करेगा और क़ब्र में दाख़िल होते वक़्त भी, यहां तक कि वोह देखेगा कि सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उसे **क़ब्र में अपने रह़मत भरे हाथों से उतार रहे हैं ।** (اَفْضَلُ الصَّلَوات عَلٰی سَیِّدِ السَّادات ص ۱۵۱ ملخصًا)

**﴾2﴿ तमाम गुनाह मुआ़फ़ :**

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی اٰلِہٖ وَسَلِّمْ

**ह़ज़रते** सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि ताजदारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो शख़्स येह दुरूदे पाक पढ़े, अगर खड़ा था तो बैठने से पहले और बैठा था तो खड़े होने से पहले उस के **गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाएंगे ।** (اَیضاً ص ۶۵)

**﴾3﴿ रह़मत के सत्तर दरवाज़े :** صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّدٍ

**जो** येह दुरूदे पाक पढ़ता है तो उस पर **रह़मत के 70 दरवाज़े खोल दिये जाते हैं ।** (اَلْقَوْلُ الْبَدِیْع ص ۲۷۷)

**﴾4﴿ छे लाख दुरूद शरीफ़ का सवाब :**

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ عَدَدَ مَا فِیْ عِلْمِ اللّٰہِ صَلَاۃً دَآئِمَۃً بِدَوَامِ مُلْكِ اللّٰہِ

**ह़ज़रते** अह़मद सावी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی बा'ज़ बुज़ुर्गों से नक़्ल करते हैं : इस दुरूद शरीफ़ को एक बार पढ़ने से **छे लाख दुरूद शरीफ़ पढ़ने का सवाब** ह़ासिल होता है । (اَفْضَلُ الصَّلَوات عَلٰی سَیِّدِ السَّادات)

www.dawateislami.net

﴾5﴿ **कुर्बे मुस्तफ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم :

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ كَمَا تُحِبُّ وَتَرْضٰى لَهٗ

**एक** दिन एक शख़्स आया तो हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उसे अपने और सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه के दरमियान बिठा लिया । इस से सहाबए किराम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن को तअ़ज्जुब हुवा कि **येह कौन ज़ी मर्तबा है ! ! !** जब वोह चला गया तो सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : येह जब मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ता है तो यूं पढ़ता है । (اَلْقَوْلُ الْبَدِيْع ص ١٢٥)

﴾6﴿ **दुरूदे शफ़ाअ़त :**

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّاَنْزِلْهُ الْمَقْعَدَ الْمُقَرَّبَ عِنْدَكَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ

शाफ़ेए उमम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : जो शख़्स यूं दुरूदे पाक पढ़े उस के लिये **मेरी शफ़ाअ़त वाजिब हो जाती है ! ! !**

(الترغیب والترہیب ج ٢ ص ٣٢٩، حدیث ٣١)

## ﴾1﴿ एक हज़ार दिन की नेकियां :

جَزَى اللهُ عَنَّا مُحَمَّدًا مَا هُوَ اَهْلُهٗ

**हज़रते** सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا से रिवायत है कि सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : इस को पढ़ने वाले के लिये **सत्तर फ़िरिश्ते एक हज़ार दिन तक नेकियां लिखते हैं ।** (مَجْمَعُ الزَّوَائِد ج ١٠ ص ٢٥٤ حدیث ١٧٣٠٥)

## ﴾2﴿ हर रात इबादत में गुज़ारने का आसान नुस्ख़ा

**ग़राइबुल कुरआन** सफ़हा 187 पर एक रिवायत नक़्ल की गई है कि जो शख़्स रात में येह दुआ 3 मरतबा पढ़ लेगा तो गोया उस ने शबे क़द्र को पा लिया । लिहाज़ा हर रात इस दुआ को पढ़ लेना चाहिये ।

दुआ येह है :

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللهُ الْحَلِيْمُ الْكَرِيْمُ ، سُبْحٰنَ اللهِ رَبِّ السَّمٰوٰتِ السَّبْعِ وَرَبِّ الْعَرْشِ الْعَظِيْم

(या'नी खुदाए ह़लीम व करीम के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पाक है जो सातों आस्मानों और अ़र्शे अ़ज़ीम का परवर दगार है) (फ़ैज़ाने सुन्नत, जिल्द अव्वल, स. **1163-1164**)

www.dawateislami.net